PACS Madhya Pradesh & Chhatisgarh

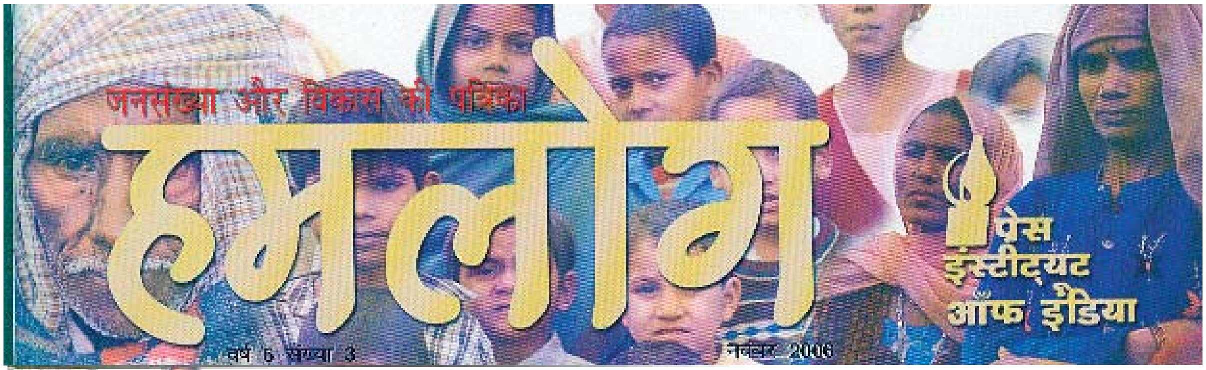

मां-बच्चे के स्वास्थ्य की खातिर

कभी सुना है कि किसी पारंपरिक रस्म को महिलाओं और बच्चों के फायदे के लिए इस्तेमाल किया गया हो। हल्दी-कुमकुम समारोह को महिलाओं द्वारा गर्भावस्था के दौरान और नवजात शिशुओं के पालन-पोषण में सुरक्षित तरीकों के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए इन्हें समाज की परंपराओं में शामिल कर लिया गया है। बाल भोज में पूरा गांव शिशु के अनाज ग्रहण शुरू करने के अवसर पर उत्सव मनाने के लिए एकत्र होता है, लेकिन इस 'अन्नप्राशन' को शिशुओं वाले परिवारों को बढ़ते शिशु की जरूरतों को समझाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

बैगा जनजाति की २४ साल की सुनीता बाई की तीन साल की लड़की लक्ष्मी है और अब उसका दूसरा बच्चा होने वाला है। उसे सात महीने का गर्भ है। कुछ महीने पहले तक वह लक्ष्मी को लेकर जंगलों में जलावन की लकड़ी तथा दूसरी वनोपज लेने के लिए जाया करती थी। वह घर से सुबह आठ बजे निकलती थी और शाम चार बजे लौट कर आती थी।

लक्ष्मी के समय तो नहीं, लेकिन सुनीता ने अपने दूसरे गर्भावस्था के दौरान अपना नाम आंगनवाड़ी केंद्र में दर्ज करा लिया है। उसने अपना टीकाकरण कार्ड संभाल कर रखा है और वह आईएफए (आयरन) की गोलियां ले रही है। उसने प्रसव के लिए एक कार्यक्रम तय कर लिया और वह अपना प्रसव संस्थागत तरीके से करवाना चाहती है।

सुनीता बताती है कि 'गोदभराई' रस्म के दौरान ''महिलाएं सब्जियां, दलिया और चावल लेकर आई थीं। जब लक्ष्मी होने वाली थी तब मैंने ज्यादा परवाह नहीं की थी।'' वह बताती है कि उसने अब घर पर ही रहना शुरू कर दिया है और वह भारी काम भी नहीं करती है।

वह यह भी जानती है कि आयरन की गोलियां लेने के बाद उसे टमाटर या नींबू लेना चाहिए और दो गिलास पानी पीना चाहिए ताकि उल्टी में गोलियां बाहर न निकल जाएं।

इन बातों पर गंभीरता से अमल करने का कारण है, बालाघाट का सामुदायिक विकास केंद्र। इस केंद्र ने तीन साल पहले १७ गांवों में काम शुरू किया था। अब इसने सीएआरई की मदद से चलाए जा रहे समन्वित पोषाहार तथा स्वास्थ्य कार्यक्रम और निर्धनतम क्षेत्र सिविल सोसाइटी के एनीमेटरों की मदद से १७० गांवों में पहुंचने की रणनीति बनाई है। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता शीला कुमारी धुपे कहती है कि उसने सुनीता का नाम जननी सुरक्षा योजना, विजयराजे योजना और मातृत्व लाभ योजनाओं में लिखा है। धुपे कहती है, ''कुल मिलाकर इससे बच्चे के जन्म पर उसे १,४०० रुपए की मदद मिल जाएगी।

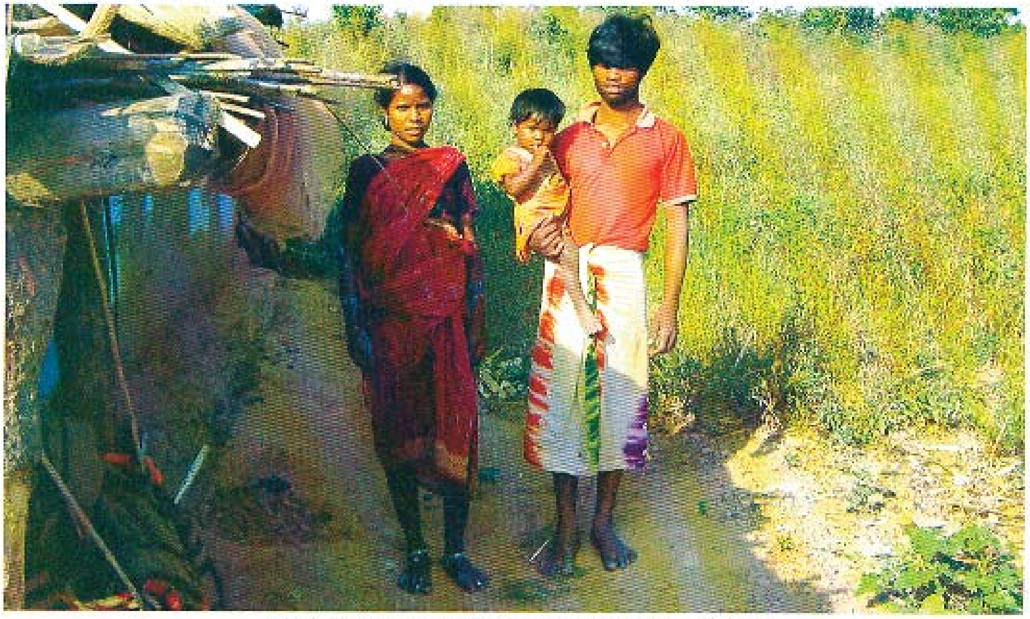

सुनीता बाई अपने पति शंभूलाल और तीन वर्ष की बेटी लक्ष्मी के साथ

PACS Madhya Pradesh & Chhatisgarh

रामवती अपनी चार बेटियों के साथ

स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने की प्रणाली की खामियों को दूर करने के साथ-साथ सामुदायिक विकास केंद्र ने अपने प्रयासों में आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा ऐसी महिलाओं के घर जाने पर भी जोर दिया है। धूपे कहती हैं कि जब वह सुनीता के घर गईं तो उसे यह देखकर प्रसन्नता हुई कि सुनीता चावल, चटनी और दलिया खा रही है।

समन्वित पोषाहार तथा स्वास्थ्य कार्यक्रम के एनीमेटर महेश तेलसे बताते हैं कि जब उन्होंने इस इलाके में काम शुरू किया था तब उन्हें आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के विरोध का सामना करना पड़ा था क्योंकि पहले तो उन लोगों ने इनकी बात ही नहीं सुनी और वे समझते थे कि समन्वित पोषाहार तथा स्वास्थ्य कार्यक्रम और निर्धनतम क्षेत्र सिविल सोसाइटी के एनीमेटर किसी निगरानी प्रणाली का हिस्सा थे तथा वे उन पर दबाव डालेंगे।

इन लोगों की कोशिशों को सुनीता बाई की चचिया सास सुकृतिबाई के अनुभव से मदद मिली। वे बताती हैं कि २० साल पहले ऐसी सुविधाएं मौजूद नहीं थीं। वे बताती हैं, "मेरे पांच बच्चे हुए थे जिनमें से अब दो ही जिंदा बचे हैं।" दो बच्चे तो बचपन में ही मर गए थे।

महिला को परिवार और समाज का आशीर्वाद दिलाने के साथ-साथ उसका परिचय दाई से भी कराया जाता है। सास और बहू के साथ बैठक भी की जाती है और इस बात का ध्यान रखा जाता है कि महिला को दो घंटे आराम मिले।

गर्भवती महिला की मदद के लिए पड़ोसियों और समाज के जुटने के अपने फायदे भी हैं। हाल ही में सुनीता बाई को उसके देवर ने गुस्से में आकर धकेल दिया था। धूपे उसे फौरन एएनएम के पास ले गईं, जिसने बताया कि सौभाग्य से सब कुछ ठीक-ठाक है। हो सकता है कि सुनीता बाई के पति शंभूलाल को अपनी पत्नी को पिछले कुछ महीनों से मिल रही तवज्जो बेकार की लग रही हो लेकिन अपने भाई के साथ झड़प के दौरान मिली मदद उसे निश्चित ही अच्छी लगी। शंभूलाल कहता है "हमें समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए। उसकी छाती में दर्द था और हमारी कुछ समझ में नहीं आ रहा था।"

इन संयुक्त प्रयासों का फायदा बच्चों को भी हुआ है। आज, बालाघाट से करीब ६५ किलोमीटर दूर बैहर ब्लॉक के करवाही गांव के बारे में आंगनवाड़ी कार्यकर्ता के विकास निगरानी रजिस्टर से सितंबर २००५ में प्राप्त आंकड़ों से पता चला है कि सामान्य पोषण वर्ग में २३ बच्चे थे, १० बच्चे प्रथम ग्रेड में थे, नौ दूसरे ग्रेड में, दो तीसरे ग्रेड में थे और चौथे ग्रेड में कोई भी बच्चा नहीं था।

इन महीनों में 'अन्नप्राशन' नियमित रूप से आयोजित किया गया और आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, समन्वित पोषाहार तथा स्वास्थ्य कार्यक्रम और निर्धनतम क्षेत्र सिविल सोसाइटी के चेंज एजेंटों और ऐनीमेटरों द्वारा माता-पिताओं को इस बारे में सूचना दी गई। लोगों को एक मंच पर लाकर उन्हें सफाई और व्यक्तिगत स्वच्छता, प्रसव से पूर्व की जाने वाली तैयारियों, परिवार नियोजन, पोषाहार, छह महीने के

PACS Madhya Pradesh & Chhatisgarh

बाद शिशु को ठोस आहार देने, प्रसव के तुरंत बाद माता द्वारा अपना दूध पिलाने, पूरी तरह से मां का दूध पिलाने, नाल पर कुछ न लगाने और प्रतिरक्षी टीकों के महत्व के बारे में बताया गया। गोदभराई और अन्नप्राशन रिवाजों के छह महीने बाद २८ बच्चे पोषण के लिहाज से सामान्य ग्रेड में थे, १२ प्रथम ग्रेड में, पांच दूसरे ग्रेड में और एक तीसरे ग्रेड में था।

गौंड दंपति चंद्रकला और मणिराम का दूसरा बच्चा मोहित कमजोर और कुपोषित था और उसके कार्ड के अनुसार वह पहले और दूसरे ग्रेड के बीच था। आंगनवाड़ी केंद्र में 'अन्नप्राशन' के बाद उसके माता-पिता को समय पर और पर्याप्त मात्रा में बच्चे को आहार देने की सलाह दी गई। पिछले छह महीनों में उसके विकास में तेजी आई है और अब वह सामान्य ग्रेड में आ गया है।

सामुदायिक विकास केंद्र के निर्गनतन क्षेत्र सिविल सोसाइटी प्रोजेक्ट को-ऑर्डिनेटर आगोन वाल्से कहते हैं कि लोगों तक पहुंच बनाने में उन्हें तीन साल लग गए हैं। जो कुछ भी वे कर पाए हैं, पहले संभव नहीं था क्योंकि तब स्वास्थ्य विभाग और समन्वित पोषाहार तथा स्वास्थ्य कार्यक्रम के बीच आपस में कोई तालमेल नहीं था। वह बताता है, "विभागों के बीच सीएआरई द्वारा संयुक्त बैठकें कराने और दूसरों को बैठकों में शामिल होने के बाद बदलाव आए हैं।" इससे आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की कार्य योजनाएं बनाने में मदद मिली है, जिन्हें सामुदायिक विकास केंद्र का समर्थन मिला है और जिनसे आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा घरों में जाना सुनिश्चित होता है।

ये परियोजना ऐनीमेटर्स, स्वसहायता समूहों, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, एएनएम पंचायत प्रतिनिधियों के संपर्क में रहते हैं और ये सभी मिलकर गर्भवती माताओं और दूध पिलाने वाली माताओं तथा उनके नवजात शिशुओं तक पहुंचते हैं। इन्होंने पोषण और स्वास्थ्य के बारे में क्षमता और जागरूकता बढ़ाने की कोशिश की है जिसके लिए इन्होंने 'गोदभराई' और 'अन्नप्राशन' रस्मों के साथ इन्हें जोड़ा है।

एक हजार तीन सौ की आबादी वाले इस गांव में बातचीत के और भी फायदे हुए हैं। २८ साल की रामकली को चौथा बच्चा होने वाला था और उसके पास तीन लड़कियां थीं फिर भी उसके पति तेजलाल ने एनएसबीटी करवा लिया। चौथा बच्चा भी एक लड़की हुई। इससे इन लोगों को कोई परेशानी नहीं हुई। चारों लड़कियां स्वस्थ हैं।

पंचायत सदस्यों के साथ बातचीत, स्वास्थ्य के मसलों पर विशेष ग्रामसभाओं की बैठकों, समय-समय पर स्व-सहायता समूहों के साथ बैठकों में ब्यौरेवार चर्चाओं से गांव वालों को प्रसव के लिए परिवहन और राज्य सरकार की जननी सुरक्षा योजना के फायदे मिल पाना संभव हो सका है। •

सुष्मिता मालवीय